तीसरी कसम

कीमत १० पैसे

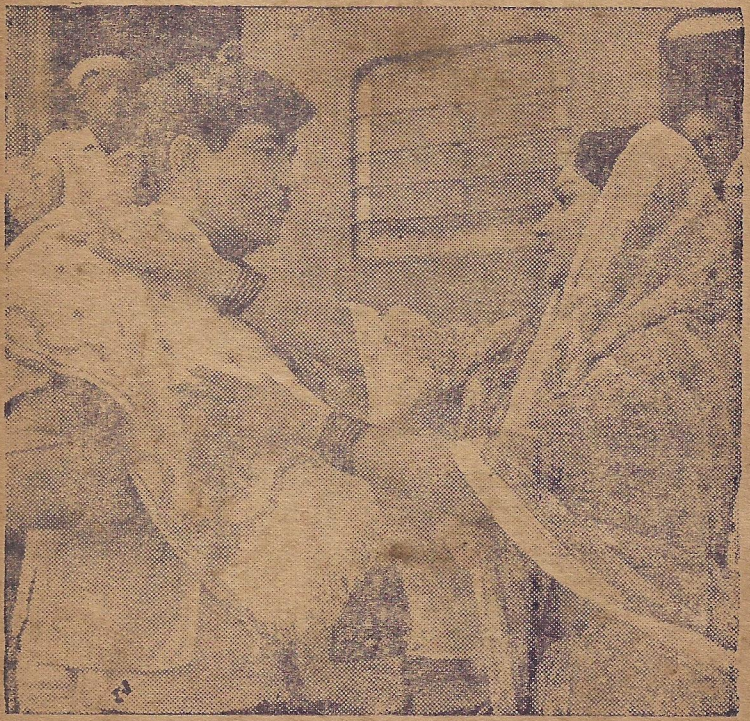

कथासार

...X...

भोला भाला देहातीगाडीवान हिरामन और नौटंकीकी एक-ट्रेल हिराबाई जीवनकी राहमें आ मिली। एक हिरामन हिराबाई को फार्बिजगंज के मेले में जा रहे थे, तीन घंटे का सफर था। साथ उन्होंने एक दूसरे के पास ले आया॥ हिराबाई की जिंदगी म शायद पहली बार एक हिरा आदमी मिला। जिसका मन गंगा के निर्मल पानी की तरह स्वच्छ था। हिरामनने शायद पहली बार एक औरत को इतने नजदीक से देखा बात ही बात में सफर कट गया॥

मेले में पहुंचकर हिराबाईने हिरामन को अपनी नौटंकी देखने का बुलावा दे डाला॥ हिरामन रोज तमाशा देखने पहुंचता हिराबाई रोज नये रुपमें सजधज कर स्टेज की चका चौधमें उतर के नाचती गाती रोज पर्दा खुलता और एक नया खेल शुरू होता

हिरामन और हिराबाई को पता भी नयीं चला नौटंकी की इस दूनियांमें परदे के पीछ एक और खेल शुरू होगया है और तमाशा देखते देखते वे खुद तमाशा बनगए है, प्यारके खेल की शुरुआत ऐसे ही अनजाने में हो जाती है, बिल्कुल अलग किस्मतकी दूनियांओंसे आए हिरामन और हिराबाई आ तो मिले एक जगह लेकिन

आगे परदेपर देखिए

❖ शैलेंद्र प्रेझेंट ❖

डायरेक्टर : बसु भट्टाचार्य ❖ म्यु.—शंकर जयकिशन

कलाकार—राजकपूर, वहिदारेहमान, दुलारी, मसीत सेन वगैरे

तीसरी कसम के गाने

१

सजनरे झूट मत बोलो खुदाके पास जाना है
न हाथी है न घोडा है वहां तो पैदल ही जाना है
तुम्हारे महल चौबारे यही रह जाएंगे सारे
अकड किस बातकी प्यारे य सरभी झुकाना है, सजनरे...
भला कीजे भला होगा बुरा कीजे बुरा होगा
वही लिख २ के क्या होगा यही सब कुछ चुकाना है, सजनरे...
लडकपन खेलमें खोया जवानी नींदभर सोया
बुढापा देखकर रोया वही किस्सा पुराना है, सजनरे...

—शैलेंद्र

२

सजनवां बैरी होगए हमार
चिठ्ठियां हो तो हर कोई बांचे भाग न बांचे कोई
करमवा बैरी होगए हमार
जाय बसे परदेसे सजनवा सौतन के भरमाए
न संदेश कोई खबरिया रुत आए रुत जाए
डूब गए हम बीच भंवरमें करके सोलह पार

सजनवा बैरी गए हमार
सूनी सेज मोर मोरी सूनी भरम न जाने कोय
छटपट तड़पे प्रीत बिचारी ममता आंसू रोये
न कोई इस पार हमारा न कोई उसपार
सजनवा बैरी गए हमार

—शैलेंद्र

-३-

दुनियां बनाने वाले क्या तेरे मनमें समाई
काहे को दूनियां बनाई तू ने काहे को दूनियां बनाई
काहे बनाए तूने माटी के पुतले
धरती ये प्यारी प्यारी मुखड़े पे उजले
काहे बनाया तूने दूनियां का खेल
जिसमें लगाया जवानी का मेल
गुपचुप तमाशा देखे वाहरे तेरी खुदाई
तू ने काहे को दुनियां बनाई
तू भी तो तड़पा होगा मनकी बनाके
तूफां ये प्यारका दिलमें छुपाके
कोई छवीतो होगी आंखों में तेरी
आंसू भी छलके होंगे पलकोंमें तेरी
बोल क्या सूझी तुझको काहे को प्रीत जगाई, तूने काहेको ...
प्रीत बनाके तूने जीना सिखाया
हंसना सिखाया रोना सिखाया

जीवन के पथ पर मीत मिलाए
मीत मिलाके तू ने सपने जगाये
सपने बनाके तू ने काहे को दे दी जुदाई
तूने काहे को दूनियां बनाई

—हसरत जैपुरी

-४-

चलते मुसाफिर मोह लिया पिंजरे वाली मुनियां
उड़उड़ बैठी हलवाईयां दूकनियां
बरफी के सब रस ले लियारे पिंजरे वाली मुनिया
उड़उड़ बैठी बजजवा दूकनियां
कपड़ा के सब रस ले लियारे पिंजरे वाली मुनियां
उड़उड़ बैठी बवनियां
बिरा के सब रस ले लियारे, पिंजड़े वाली मुनियां

—शैलेंद्र

-५-

पान खाए सैयां हमारे
सांवली सुरतियां होंठ लाल लाल
हाय हाय मलमल का कुर्ता
मलमल के कुरत पे छींटे लाल लाल
हमने मगाई सुरमेदानी ले आया जालिम बनारस का जर्दा
अपनी ही दूनियां में खोये रहे
वो हमारे जी को न पूछे बेदर्दी पान खाए

बगिया गुनगुन पायल छुन छुन
चुपके से आई है रुत अलबेली
खिल गई कलियां दुनियां जाने
लेकिन न जाने बगिया का माली, पानखाए
खाके गिलोरी शामसे उडे सोजाए वो दिया बातीसे पहले
आंगन अटारी मै घबराइ डोलूं
चोरीके डरसे दिल मोरा दहले—पान खाए...

—शैलेंद्र

६

मारे गए गुलफाम अजी हां मारे गए गुलफाम
उल्फत भी रास न आई अजीहां मारे गए गुलफाम
एक सब्ज परी देखी और दिल गंवा बैठे
मस्ताना निगाहोंपर फिर होश लूटा बैठे
काहे को मै मुस्काई अजीहां मारे गए गुलफाम
आबरु की कटारीसे नैनों की दो धार से
वह होके रहे जख्मी इक वादे दहारीसे
ये जुल्फ क्युं लहराइ अजी हां मारे गए गुलफाम
एक प्यारकी महफिलमे वो आए मुकाबिलमें
वो तीर चले दिलपर हलचलसी हुई दिलमें
चाहतकी सजा पाई अजीहां मारे गए गुलफाम...

—हसरत जैपुरी

७

हया गजब कहीं तारा टूटा
लूटारे लूटा मेरे सैयाने लूटा
पहला तारा अटरियापे टूटा दातों तले मैंने दाबा अंगुठा
लूटारे लूटा सांवरिया लूटाने
दूसरा तारा बजरिया मे टूटा
देखा है सबने की मेला था छूटा
लूटारे लूटा सिपहियाने लूटा
तीसरी तारा फुल बगियामें टूटा
फूलोंसे पूछ कों है कौन झूटा
लूटारे दगोगाने लूटा

शैलेंद्र

८

लाली लाली डोलियामे लालीरे दुल्हनियां
पियाकी प्यारी भोली भालीरे दुल्हनियां
मीठे बैन तीख नैनों वालीरे दुल्हनियां
लौटगी जो गोदी भरे भरे हमें न बुलाना
लड्डू पढे खाना अपन हाथोंसे खिलाना
तेरी सब रात ही दीवालीरे दुल्हनियां
दुल्हे राजा रखना जतनसे दुल्हको
कभी न दुखाना तुम गोरिया के मन को
नाजुक है ताजों की पालीरे दुल्हनियां

मन मुस्काये दोनों मुखड़ा छुपाये
भेद न खोले न तो बोले बतियारे
जुग जुग जिए जोड़ी मतवाली दूल्हनियां —शैलेंद्र

—९—

रहेगा इश्क तेरा खाक में मिलाके मुझे
हुए है इब्तेदा में रंज इन्तेहा के मुझे
आभीजा रात ढलने लगी चांद छुपने चला
शाम की तरह रातभर तेरी याद में बसबर
जली आरजू दिल जला सितारोंने मूंह फेरकर
कहां मलविद! हमसफर चला कारवा अब चला
उफक पर खड़ी है सहर अन्धेरा है दिल में इधर
वही रोज का सिलसिला —शैलेंद्र

तैयार है ! तैयार है !

सिनेमा संगीत भाग ४० वां

तीन रंगी मुखपृष्ठ किमत ६० पैसे

प्रकाशक—एफ. बी. बुरहानपूरवाला, सेंट्रल प्रकाशन, सिम्प्लेक्स बिल्डिंग, पावबाजा स्ट्रीट, कृष्णासिनेमा न्यू चर्नीरोड, बंबई—४

मुद्रक—सज्जाद हुसेन कुर्बान हुसेन

ठाकोर प्रिंटिंग प्रेस, मुझफराबाद हॉल, ग्रांट रोड, बंबई—७